वसंतराव श्रीनिवास सिनै डेम्पो

श्री वेंकटेश सिनै डेम्पो, जिन्हें वसंतराव के नाम से भी जाना जाता है, का जन्म ४ मार्च, १९१६ को श्रीमती सत्यभामा और श्री श्रीनिवास सिनै डेम्पो के कुटुम्ब में हुआ। कैलापुर (सांताक्रूज) के अपने जिस परिवार में वसंतराव का लालन-पालन हुआ, वह धार्मिकता और नियम-निष्ठ परंपराओं से ओत-प्रोत था। इसी धर्म-प्रवण वातावरण के प्रभाव में वसंतराव अपने कुल के देवी-देवताओं की परम भक्ति और अपने पंथ के मठाधीश (पॉन्टिफ) के प्रति श्रद्धा के संस्कार लेकर पले-बढ़े। उन्होंने मराठी, पुर्तगाली और अंग्रेजी भाषा का अध्ययन किया और इसी प्रक्रिया में उनकी यह समझ विकसित हुई कि गोवा की सरहदों से आगे व्यवसाय की दुनिया की अनंत संभावनाएं उनकी प्रतीक्षा कर रही हैं। पीढ़ी-दर-पीढ़ी भू-स्वामित्व, पोत परिवहन, कृषि उत्पादों के व्यापार तथा समुद्री बीमा जैसे कार्यों में लगे रहने के कारण, डेम्पो परिवार को अपनी सत्यनिष्ठा और सामाजिक उत्तरदायित्व के लिए सम्मानित किया गया। प्रतिभासंपन्न वसंतराव ने व्यवसाय के नवीन आयामों और प्रवृत्तियों को अपनाते हुए, इस गौरवान्वित परंपरा को जीवंत रखा तथा इसे और सुदृढ़ किया।

विदेशों से सामग्री व्यापार का कार्यप्रारंभ कर वसंतराव ने गोवा के ग्राहकों को विकल्पों की विविधता उपलब्ध कराई। व्यवसाय की संभावनाओं की तलाश करते हुए, उन्होंने गोवा की लाल धरा में लौह अयस्क के खनन की अपार क्षमता को पहचान कर अपनी महान दूरदर्शिता का परिचय दिया। १९३० के उत्तरार्द्ध और १९४० के पूर्वार्द्ध में खनन में रियायत प्राप्त करके, उन्होंने वर्ष १९४१ में ग्रुप की फ्लैगशिप, वी एस डेम्पो एंड कम्पनी प्रा. लिमिटेड की स्थापना की, जिसमें उनके भाई श्री वैकुंठराव एस डेम्पो ने उन्हें सहयोग दिया। यह कम्पनी क्षेत्र की प्रमुख खनन और प्रोसेसिंग संस्था बनने के साथ-साथ एक प्रतिष्ठित निर्यात संस्था भी बन गई। बिचोलिम पर गोवा की तब तक की सबसे बड़ी अयस्क से समृद्ध खान का अधिग्रहण करने पर, उन्होंने कुछ वर्ष पश्चात फ्लैगशिप की सहायक संस्था के रूप में डेम्पो खनन निगम प्रा. लि. की स्थापना की। स्वेज नहर के माध्यम से यूरोप-उम्मुखी निर्यात के जोखिम को पहचानते हुए, वसंतराव सुदूर पूर्व की और उन्मुख हुए और जापान में, विशेषकर निप्पोन स्टील के साथ निर्यात आरंभ किया। तब से लेकर व्यापारिक संबंधों का यह लम्बा सफर आज भी जारी है,जो आधी सदी से भी अधिक है। वसंतराव ने क्रुप्प जैसे अंतर्राष्ट्रीय कारपोरेट के दिग्गजों के साथ संविदा पर माल-वाहक पोतों में निवेश किया। ऐसा उन्होंने इस उद्यम में लॉजिस्टिक्स की दृष्टि से प्रचालन में बड़े पैमाने पर कारोबार की संभावना को सही पहचानते हुए किया। वसंतराव के दृढ़ संकल्प के कारण ही कम्पनी, गोवा के मुक्ति-पूर्व नौसेना अवरोध को पार करने में सफल रही।

गोवा की मुक्ति के बाद के वर्ष समेकन और विस्तार के थे, जब उनके पुत्र और बाद में उनके उत्तराधिकारी, वासुदेव वी. डेम्पो ने उन्हें एक दीर्घ, समर्पित और सफल प्रशिक्षुता अवधि के लिए सहयोग देना आरंभ किया। इससे डेम्पो हाउस में नवीन कार्यकलापों की शुरुआत हुई। कैलसाइन पेट्रोलियम कोक, समुद्री पेंट और शिशुओं के लिए आहार का निर्माण, समाचार पत्र के प्रकाशन, नौवहन पोत निर्माण, सिविल करार, अचल संपत्तिविकास, यात्रासेवाएं, ऑटोमोबाइल डीलरशिप, जहाजकुली के निर्माण संबंधी कार्य आरंभ किए गए।

वसंतराव डेम्पो ने नव-मुक्त गोवा में उच्च शिक्षा की नींव रखी। उन्होंने गोवा के निरंतर श्रेष्ठता का प्रदर्शन करने वाले फुटबॉल क्लब को संरक्षण प्रदान किया और धर्मार्थ कार्यों में अपना योगदान दिया और गोवा के उद्योग संवर्धन में अपने प्रभाव का इस्तेमाल किया। राष्ट्र निर्माण में, उनके प्रयासों के लिए सम्मानित करते हुए, भारत सरकार ने उन्हें नागरिक सम्मान "पद्मश्री" से नवाजा। कुछ उल्लेखनीय पुरस्कारों में - भारत का गौरव बढ़ाने और राष्ट्र विकास में योगदान के लिए लंदन आधारित अनिवासी भारतीय संस्थान द्वारा प्रदान किया गया जवाहरलाल नेहरू उत्कृष्टता पुरस्कार १९९०, रोटरी क्लब पणजी द्वारा प्रदत्त "एम्बैसेडर ऑफ गुडविल" सम्मान तथा शिरोमणि संस्थान द्वारा प्रदत्त राष्ट्रीय एकता पुरस्कार शामिल हैं ।

वसंतराव ने अनेक प्रतिष्ठित संस्थानों के लिए सलाहकार के रूप में अपना योगदान दिया। वे अनेक प्रतिष्ठित समितियों और निकायों के सदस्य रहे। उन्होंने भारत-पुर्तगाली व्यापार परिषद के अध्यक्ष के रूप में कार्य किया। वे भारत के लिए लॉयड शिपिंग के रजिस्ट्रार, शिपिंग की तकनीकी समिति के अमेरिका ब्यूरो और भारत-जापान व्यापार सहयोग समिति के सदस्य थे। उन्होंने गोवा के वाणिज्य और उद्योग चैम्बर के अध्यक्ष के रूप में भी अपनी सेवाएं प्रदान कीं। वसंतराव का व्यक्तित्व अत्यधिक आकर्षक, गरिमामय तथा तेज और प्रभाव से परिपूर्ण था। ०९ नवम्बर, २००० को उनका निधन हो गया, लेकिन तब तक वे भारत के औद्योगिक इतिहास और गोवा की जनता के दिलो-दिमाग में अपना एक विशिष्ट स्थान बना चुके थे।

डाक विभाग श्री वसंतराव श्रीनिवास सिनै डेम्पो पर स्मारक डाक टिकट जारी करके प्रसन्नता का अनुभव करता है।

आभार:-

मूलपाठ : प्रस्तावक द्वारा उपलब्ध कराई गई सामग्री पर आधारित

डाक टिकट/प्रथम दिवस आवरण/विरूपण : श्रीमति नीनु गुप्ता

भारतीय डाक
India Post

तकनीकी आंकड़े
TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग	:	500 पै.
Denomination	:	500 p
मुद्रित डाक-टिकटें	:	4.012 लाख
Stamps Printed	:	0.4012 million
मुद्रण प्रक्रिया	:	वेट ऑफसेट
Printing Process	:	Wet Offset
मुद्रक	:	प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	:	Security Printing Press, Hyderabad

©डाक विभाग, भारत सरकार।डाक-टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास है।
© Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the stamp, first day cover and information brochure rest with the Department.

मूल्य ₹ 5.00

VasantraoSrinivassa Sinai Dempo

Mr. Vencatexa Sinai Dempo, also known as Vasantrao, was born to Mrs. Satyabhama and Mr. Srinivassa Sinai Dempo on 4th March, 1916. The family home at Calapur (Santa Cruz) in which the young Vasantrao grew up was steeped in religiosity and orthodox ritual, from which came his staunch piety towards his family deities and reverence for the Pontiff of the Monastic School to whose sect he belonged. Having studied Marathi, Portuguese and English, he grew aware of the great world of business that lay beyond Goa. Generations of land-owning, shipping, trading in agricultural produce and underwriting had led to the Dempos being esteemed highly, for their integrity as much as for their social responsibility. It was Vasantrao's genius that he kept alive and strengthened this glorious tradition, while pioneering new lines and new practices of business.

Commencing the trading in commodities sourced overseas, Vasantrao made available a wealth of choice to the Goan consumer. Casting about for business opportunity, he showed great foresight in recognizing the potential for iron ore mining in Goa. Acquiring mining concessions in the late 1930s and early 1940s, he formed V. S. Dempo & Co. Pvt. Ltd., the Group flagship in 1941, assisted by his brother, Mr. Vaikunthrao S. Dempo. The Company would go on to become a much- lauded export house in addition to the region's premier mining and processing concern. Acquiring the ore-rich mine at Bicholim, till today Goa's largest, he set up Dempo Mining Corporation Pvt. Ltd., the flagship's subsidiary, a few years later. Recognizing the vulnerability of Europe –oriented exports to the Suez Canal, Vasantrao looked far Eastwards instead, commencing exports to Japan, in particular to Nippon Steel, starting a long business relationship that abides to this day; over half a century later. Vasantrao invested in transhipper vessels on contracts with international corporate giants such as Krupp. He did so, correctly foreseeing the logistical scale of operations involved in the undertaking. Vasantrao's iron resolve rode the Company out of the pre-Liberation naval blockade of Goa.

The years following Goa's Liberation were those of consolidation and expansion, when his son and eventual successor, Vasudeva V. Dempo, joined in assisting him in a long, devoted and fruitful apprenticeship that saw newer lines of activity at the House of Dempo. Manufacture of calcined petroleum coke, marine paints and baby foods, newspaper publishing, shipping, ship building, civil contracting, real estate development, travel services, automobile dealerships, and stevedoring, followed.

Vasantrao Dempo set the foundations for higher education in newly- liberated Goa. He patronized Goa's most consistently excelling soccer club and supported charitable causes and exerted his influence in promoting Goan industry. Honoring him for his efforts in nation-building, the Government of India conferred upon him the civilian award, "Padmashri". Some of the awards that deserve special mention are the Jawaharlal Nehru Award for Excellence for 1990 for enhancing India's prestige and contributing towards national development, given by the London-based Non Resident Indians' Institute, the Rotary Club of Panjim`s "Ambassador of Goodwill" honour, and the Shiromani Institute's award for national integration.

Vasantrao was highly sought after as advisor by a number of institutions of worth. He sat on several highly regarded Committees and bodies. Chairman of the Indo- Portuguese Trade Council, he was also a member of the Lloyd's Register of Shipping for India, the American Bureau of Shipping's Technical Committee and the Indo- Japan Business Cooperation Committee. He also served as the President of the Goan Chamber of Commerce and Industry.

Vasantrao was a man of great charm and enormous dignity. He radiated authority and exuded an unmistakable aura of power. When the end came on 9th November, 2000 Vasantrao had ensured not only a place for himself in India's industrial history, but also in the hearts and minds of Goans.

The Department of Posts is pleased to release a commemorative postage stamp on Shri Vasantrao Srinivassa Sinai Dempo.

Credits:-

Text	:	Based on the material received from proponent
Stamp/ FDC/ Cancellation Cachet	:	Smt. Nenu Gupta

भारतीय डाक विभाग
DEPARTMENT OF POSTS
INDIA



वसंतराव श्रीनिवास सिनै डेम्पो
VASANTRAO SRINIVASSA SINAI DEMPO

विवरणिका BROCHURE